srijan सृजन
Self-Reliant Initiatives through Joint Action

उन्नत खेती-खुशहाल किसान

Hindustan Unilever Limited
Hindustan Unilever Foundation

जीवामृत

निर्माण सामग्री (एक एकड़ हेतु)

- 10 किलोग्राम देशी गाय का गोबर
- 5 से 10 लीटर गोमूत्र
- 2 किलोग्राम गुड़ या फलों के गुर्दो की चटनी
- 2 किलोग्राम बेसन (चना, उड़द, मूंग)
- 200 लीटर पानी
- 5o ग्राम मिट्टी (मेड की)

बनाने की विधि

सर्वप्रथम कोई प्लास्टिक की टंकी या सीमेंट की टंकी ले फिर उस पर 20 ली. पानी डाले । पानी में 10 किलोग्राम गाय का गोबर व 5 से 10 लीटर गोमूत्र एवं २ किलोग्राम गुड़ या फलों के गुद्दो की चटनी मिलाएं। इसके बाद २ किलोग्राम बेसन, 50 ग्राम मेड़ की मिट्टी या जंगल की मिट्टी डालें और सभी को डंडे से मिलाएं। इसके बाद टंकी को जालीदार कपड़े से बंद कर दे। सुबह शाम डंडे से घोल को हिलाएं। 48 घंटे बाद जीवामृत तैयार हो जाएगा । इस जीवामृत का प्रयोग केवल सात दिनों तक कर सकते है । प्लास्टिक व सीमेंट की टंकी को छाया में रखे जहां पर धूप न लगे। गोमूत्र को धातू के बर्तन में न रखें। छाया में रखे हुये गोबर का ही प्रयोग करें।

उपयोग

प्रति एकड २०० लीटर तैयार जीवामृत सिंचाई के बहते पानी पर बून्द बून्द टपका कर दें। फसलों और पौधो पर जीवामृत का छिडकाव कर दें। छिडकाव करने से उनको उचित पोषण मिलता है और दाने/फल स्वस्थ होते है।

नोट: 7-10 दिन तक प्रयोग कर सकते हैं।

दशपर्णी अर्क

दर्शपर्णी अर्क का प्रयोग सभी तरह के रस चूसक कीट और सभी इल्लियों के नियंत्रण के लिए किया जाता है ।

निर्माण सामग्री (एक एकड़ हेतु)

- 200 लीटर पानी
- 2 किलोग्राम गाय का गोबर
- 10 लीटर गोमूत्र
- 2 किलोग्राम करंज के पत्ते
- 2 किलोग्राम सीताफल के पत्ते
- 2 किलोग्राम धतूरा के पत्ते
- 2 किलोग्राम तुलसी के पत्ते
- 2 किलोग्राम पपीता के पत्ते
- 5 किलोग्राम नीम की पत्ती
- 2 किलोग्राम बेल के पत्तें
- 2 किलोग्राम कनेर की पत्ती
- 500 ग्राम तम्बाकू पीस के या काटकर
- 500 ग्राम लहसुन
- 500 ग्राम पिसी हल्दी
- 500 ग्राम तीखी हरी मीर्च
- 200 ग्राम अदरक या सोंठ

बनाने की विधि

सर्वप्रथम एक प्लास्टिक के ड्रम में 200 लीटर पानी डाले फिर इसमें 2 किलोग्राम गाय का गोबर और 10 लीटर गोमुत्र मिला दें। अब इसमें नीम, करंज, सीताफल, धतूरा, बेल, तुलसी, आम, पपीता, करंज, गेंदा की पत्ती की चटनी डालें और डंडे से चलाकर जालीदार कपड़े से बंद कर दें और 40 दिन छाए में रखा रहने दे, परंतु प्रतिदिन सुबह शाम डंडे से हिलाते जरूर रहें।

भण्डारण एवं अन्य सावधानियां

इसको छ: माह तक प्रयोग कर सकते है। इस दशपर्णी अर्क को छाये में रखें। बनाते समय इसको सुबह शाम चलाना न भूलें। प्रति एकड के लिए 200 लीटर पानी में 10 लीटर इशपर्णी अर्क मिलाकर छिड़काव करें।

नोट: 6 माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

घन जीवामृत

घन जीवामृत में सूक्ष्मजीव सुषुप्त अवस्था में रहते हैं। खेत में डालने पर ये जीव सक्रिय होकर फसल को पोषक तत्व उपलब्ध करवाते हैं।

निर्माण सामग्री (एक एकड़ हेतु)

- 100 किलोग्राम गाय का गोबर
- 1 किलोग्राम गुड/फलों की चटनी
- 2 किलोग्राम बेसन (चना, उड़द, अरहर, मूंग)
- 50 ग्राम मेड़ या जंगल की मिट्टी
- 1 लीटर गौमूत्र

बनाने की विधि

सर्वप्रथम 100 किलोग्राम गाय के गोबर को किसी पक्के फर्श व पोलीथीन पर फैलाएं। एक पात्र में गुड या फलों की चटनी, बेसन एवे मेड़ या जंगल की मिट्टी डालकर उसमे गौमूत्र मिलाये। घोल बनाकर इसको गाबर के ऊपर छिडकर कर फॉवड़ा से अच्छी तरह से मिला दें। इस सामग्री को 48 घंटे तक किसी छायादार स्थान पर एकत्र कर या थपिया बनाकर जूट के बोरे से ढक दें। 48 घंटे बाद उसको छाया पर सुखाकर चूर्ण बनाकर भंडारण करें। इस घन जीवामृत का भण्डारा करके 6 माह तक प्रयोग कर सकते हैं। गोबर ताजा ही लें या फिर अधिकतम सात दिन तक पुराना गोबर का प्रयोग करें। गोमूत्र किसी धातु के बर्तन में न रखे।

उपयोग

एक बार खेत जुताई के बाद घन जीवामृत का छिड़काव कर खेत तैयार करें।

नोट: 6 माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

बीजामृत

निर्माण सामग्री

- गाय का मूत्र - 5 लीटर
- गाय का गोबर - 5 किलोग्राम
- चुना - 50 ग्राम
- पानी - 20 लीटर
- 1 लीटर गौमूत्र

बनाने की विधि

20 लीटर पानी को एक बर्तन में लेकर उसमे गौमूत्र मिलते है । फिर गोबर चूना, तथा पेड़के ताल की मिट्टी मिलाकरअच्छी तरह से मिश्रण को मिला देते है। इस मिश्रणको 24 घंटे तक छाया में रखते है । फिर 100 किलो बीज को फ़र्स या पॉलिथीन शीत पर बिछाकरउस पर बीजामृत का छिड़काव कर देते है । फिर हाथ से अच्छी तरह मिलाया जाता है ।

उपयोग

बोआई से 24 घंटे पहलेबीज शोधन करना चाहिए।

BIWAL

srijan सृजन
Self-Reliant Initiatives through Joint Action

उन्नत खेती-खुशहाल किसान

Hindustan Unilever Limited
Hindustan Unilever Foundation

अग्नि अस्त्र

अग्नि अस्त्र का उपयोग तना कीट फलों में होने वाली सूंडी एवं इल्लियों के लिए किया जाता है

निर्माण सामग्री

- 20 लीटर गोमूत्र
- 5 किलोग्राम नीम के पत्ते की चटनी
- आधा किलोग्राम तम्बाकू का पाउडर
- आधा किलोग्राम हरी तीखी मिर्च
- 500 ग्राम देशी लहसुन की चटनी

बनाने की विधि

ऊपर लिखी हुई सामग्री को एक मिट्टी के बर्तन में डालें और गरम करें। चार बार उबाल आ जाने के बाद आग से उतार कर ठंडा करें आग से उतारने के बाद 48 घंटे छाया में रखें। 48 घंटे में चार बार डंडे से चलाएं। यह 48 घंटे तें तैयार हो जाएगा।

भण्डारण एवं अन्य सावधनियां

अग्नि अस्त्र का प्रयोग भण्डारण करके केवल तीन माह कर सकते हैं । उबालने के लिए मिट्टी के बर्तन को ही लें। गोमूत्र धातू के बर्तन में न ले न ही भंडारित करें।

उपयोग

प्रति एकड के लिए 5 लीटर अग्नि अस्त्र को छानकर 200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे मशीन या नीम के लेवचा से छिड़काव करें ।

नोट : 3 माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

ब्रम्हास्त्र

ब्रम्हास्त्र का उपयोग अन्य कीट और बड़ी सूंडी इल्लियों आदि के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- 10 लीटर गोमूत्र
- 2 किलोग्राम बेल के पत्ते
- 3 किलोग्राम नीम की पत्ती
- 2 किलोग्राम अरंडी के पत्ती
- 2 किलोग्राम करंज की पत्ती
- 2 किलोग्राम धतूरा के पत्ते
- 2 किलोग्राम सीताफल पत्ती

बनाने की विधि

मिट्टी के बर्तन में गोमूत्र डालकर उसमे उपरोक्त पत्तों की चटनी कर के कोई भी सभी प्रकार की चटनी को मिला दें। अब बर्तन आग में चढा कर मिश्रण को उबालें। जब चार उबाल आजाए तो आग से उतारकर 48 घंटे छाया में ठंडा होने दें। इसके बाद कपडें से छानकरप्रयोग करे ।

भण्डारण एवं अन्य सवाधानियां

ब्रह्मास्त्र का प्रयोग छ : माह तक कर सकते है। भंडारण मिट्टी के बर्तल में करें। ब्रह्मास्त्र को छाया में रखें एवे धूप से बचाएं, प्लास्टिक के बर्तन में ले या रखें।

उपयोग

प्रति 200 लीटर पानी में तैयार 10 लीटर ब्रह्मास्त्र को छान कर मिलाएं और स्प्रे मशीन मे छिडकाव करें।

नोट : 6 माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

नीमास्त्र

नीमास्त्र का उपयोग रस चूसने वाले कीट एवं छोटी सुंडी, इल्लियों आदि के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

सामग्री

- 5 किलोग्राम नीम पत्तियांयुक्त टहनियां
- 5 किलोग्राम नीम फल की खली
- 5 लीटर गोमूत्र
- 1 किलोग्राम गाय का गोबर

बनाने की विधि

सर्वप्रथम प्लास्टिक के बर्तन पर 5 किलोग्राम नीम की पत्तियों की चटनी, और 5 किलोग्राम नीम के फल (पीस व कूट कर) डालें एवे 5 लीटर गोमूत्र व 1 किलोग्राम गाय का गोबर डालें। इन सभी सामग्री को डंडे से चलाकर जालीदार कपड़े से ढक दें। यह 48 घंटे मे तैयार हो जाएगा। 48 घंटे में चार बार डंडे से चलाएं।

भण्डारण एवं अन्य सावधानियां

नीमास्त्र का प्रयोग छ : माह तक हर सकते है। नीमास्त्र को मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में भरकर छाये में रखें एवं धूप से बचाएं। गोमूत्र प्लास्टिक के बर्तन में ले या रखें।

उपयोग

प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में तैयार 10 लीटर नीमास्त्र को छान कर मिलएं और स्प्रे मशीन से छिड़काव करें।

नोट : 6 माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

छॉछ

ताजी छॉछ

250 से 500 मिलीलीटर ताजी छॉछ को एक पम्प (15 लीटर पानी)में मिलाकर छिड़कने से पोधे की बढ़वार और विकास अच्छा होता है।

पुरानी छॉछ बनाने की विधि

छॉछ को मटके में भरकर, खेत में किसी पेड के नीचे इस मटके को गाड़ देते है यह छॉछ 20 से 25 दिनों में सड़ जाती है ।

उपयोग

इस छॉछ को 250 से 500 मिलीलीटर/1 से 2 गिलास, एक पम्प में मिलाकर फसलों में छिडकने से इल्ली की समस्या पर नियंत्रण होता है चने की इल्ली, कपास का डेंडू, लाल तुअर की फली में लगने वाले कीटों से रोथाम होती है। छॉछ को तांबे के पात्र में 20 से 25 दिनों के लिये संग्रहित करने से अच्छा रोगनाशी बनता है । इसे भी 1 से 2 गिलास (250 से 500 मिलीलीटर) 15 लीटर पानी मिलाकर फसल पर छिडकते हैं।

अन्य उपयोग

150 मिलीलीटर निमेबली काढा एवं 500 मिलीलीटर ताजी छॉछ को एक पम्प में मिलाकर छिडकने से रस चूसने वाले किटों जैसे हरे व सफेद मच्छर से रोकथाम होती है।

BIWAL